बुद्धि कर्मानुसारणी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

चौरासी लाख जीव योनियों में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो बुद्धि और विवेक से कार्य करता है। मानव और पशु में यही अंतर है कि मानव में बुद्धि है और पशु में बुद्धि नहीं है। जिस मानव में विवेक तत्व नहीं रहता, वह पूंछ और सींग से रहित पशु ही है। अन्य प्राणी इस संसार में आते हैं और चले जाते हैं किन्तु मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसे ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना कहा जाता है। मानव पुरुषार्थ के द्वारा नर से नारायण बन सकता है। उसके द्वारा जीवन क्षेत्र में किया गया पुरुषार्थ उसके मार्ग को प्रशस्त करता है। वह कठिनाईयों को कभी अपने ऊपर भारी नहीं होने देता बल्कि कठिनाईयों को जीतकर उस पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करता है।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ बहुत आवश्यक है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समयबद्ध प्रयास होना जरूरी है। समय–समय पर कार्य की समीक्षा भी करते रहना चाहिए। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है। यह सब मनुष्य के बुद्धि का ही परिणाम है। हममे से अधिकांश लोग जिने मनवांछित वस्तुएं प्राप्त नहीं होती हैं, वे स्वयं की कमियों को देखने की बजाय भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते हैं। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते हैं। जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते है, वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसित होता है। पुरुषार्थी अथवा कर्म पर विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर उसका निवारण करने का प्रयास करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। जीवन संघर्ष में वह निरंतर अग्रसित होता है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भाग्य भरोसे बैठे रहते हैं। ऐसे व्यक्ति थोड़ी सी सफलता अथवा खुशी मिलने पर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं और थोड़ी सी कठिनाई आने पर विचलित हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों से सफलता बड़ी दूर रहती है। ऐसे व्यक्ति स्वयं की कमियों को खोजने तथा उनको ढूंढ़ने के बजाय अपने भाग्य को दोष देते हैं। महात्मा गांधी ने अपने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने पुरुषार्थ से अंग्रेजी दास्ता से मुक्ति दिलायी। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म का मार्ग पुरुषार्थ का मार्ग है। धैर्यपूर्वक अपने पथ पर अडिग रहना चाहिए। पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में यश अर्जित करता है। वह स्वयं को ही नहीं अपितु अपने परिवार, समाज अथवा देश को गौरवान्वित करता है। हम नित्य प्रति कुछ न कुछ क्रिया करते हैं और उसका परिणाम भी हमें मिलता है। एक विद्यार्थी परीक्षा में कठिन परिश्रम करता है तो वह अवश्य उत्तीर्ण होता है। परन्तु वही विद्यार्थी भाग्य के भरोसे बैठे रहकर परिश्रम करना बंद कर दे तो उसका उत्तीर्ण होना असंभव है। यहां पर हम देखते हैं कि एक ही विद्यार्थी उत्तीर्ण भी हो सकता है और अनुत्तीर्ण भी। इसका केवल यही कारण है कि विद्यार्थी जैसा चाहे वैसा ही होगा।

ईश्वर ने मनुष्य को कोई भी व्यर्थ की वस्तु नहीं दी है। किसी न किसी रूप में प्रत्येक वस्तु का उपयोग मनुष्य द्वारा होता ही रहता है। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए दी है कि वह अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करें। सभी मनुष्यों में आकार, प्रकार, इन्द्रियों की समानता दिखलाई पड़ती है। किन्तु बुद्धि का अन्तर सभी में है। कोई अधिक बुद्धिमान है तो कोई कम बुद्धिमान। कोई सुखी है तो कोई दुःखी। कोई अमीर है तो कोई गरीब। इस भिन्नता का कारण क्या है? इस भिन्नता का कारण कर्म ही है। जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा फल प्राप्त होता है। मानव की बुद्धि भी वैसी ही बन जाती है। बहुत से अमीर व्यक्ति पहले बहुत गरीब थे, किन्तु बुद्धिमानी से उन्होंने जो व्यवसाय शुरू किया उसमें उन्हें लाभ प्राप्त होता गया। यदि सकारात्मक सोच के साथ कोई कार्य प्रारंभ किया जाता हैं तो निश्चित ही उसका परिणाम अच्छा होता है। यदि बुद्धि नकारात्मकता की ओर जाती है तो निश्चित ही पतन हो जाता है।

आधुनिक युग वैश्वीकरण का युग है। विकास की दौड़ में जो पीछे रह गया वह पीछे ही होता चला जायेगा। आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के विकसित देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर चला जाये। आज का युग बौद्धिक युग है। छोटी से छोटी वस्तु का प्रयोग बहुत बड़े–बड़े कार्यों को सिद्ध कर देती है। इस संसार में कोई भी वस्तु अनुपयोगी नहीं है। बुद्धिमान व्यक्ति तिनकों को जोड़कर रस्सी बना लेता है और उस रस्सी से बड़े–बड़े मतवाले हाथियों को बांध दिया जाता है। वस्तु का उपयोग कैसे करना है यह बुद्धि ही निश्चय करती है। दुनिया के बहुत से देश जो हमारे देश के साथ ही स्वतंत्र हुए थे, किन्तु आज हमारे देश की अपेक्षा उनका अधिक विकास हो गया है। जिसका कारण यह है कि उस देश की नीतियां, वहां के लोगों की राष्ट्रभक्ति और कार्य करने की क्षमता और बुद्धिमत्ता अधिक थी। जिसका परिणाम यह है कि वे देश विकसित देशों की श्रेणी में आ गये हैं। वैज्ञानिक युग में पग–पग पर बुद्धि की आवश्यकता है। कोई भी परीक्षा हो वही विद्यार्थी सफल हो पाता है जो अधिक बुद्धिमानी से प्रश्नों का उत्तर देता है। कम समय में अधिक से अधिक बुद्धि का प्रयोग सफलता की निशानी है।